सप्ताह में एक बार हल्की सिंचाई की आवश्यकता होती है।

फसल विदोहन

बुआई के लगभग 100 दिनों के बाद फसल काटने योग्य हो जाती है। पौधे को जमीन से तीन इंच ऊपर से काटना चाहिये ताकि बचे भाग में नये पत्ते फिर से आ सके। समयानुसार पत्तों की पहली कटाई 100 से 120 दिन में कर लेनी चाहिये ताकि बाद की कटाई 90 दिनों के अंतराल में होनी चाहिये। इस तरह एक बार लगाने के बाद यह पौधा 5 साल तक उपज देता रहता है। साल भर में चार बार कटाई कर फसल प्राप्त कर सकते हैं। पत्तों की प्राप्ति के साथ बीज भी प्राप्त करते हैं। इसके लिये फल्लियों में बीज पड़ने पर तोड़कर उन्हें धूप में सुखाकर तथा सूखी फल्लियों को डंडों से पीटकर बीज निकाले जाते हैं। जिन्हें आगामी फसलों में बुवाई हेतु उपयोग किया जा सकता है।

उपज आर्थिकी

उपज / हेक्टे.	-	10 क्विंटल सूखी पत्तियां
व्यय / हेक्टे.	-	रु. 5000 (प्रथम वर्ष में)
बाजार भाव	-	15 से 18 रुपये प्रति किलो
बीज विक्रय मूल्य	-	150 से 300 रु. प्रति किलो
आय	-	रु. 15,000 से 18,000/ हेक्टे.
लाभ	-	रु. 10,000 से 13,000/हेक्टे.

•••

Printed at : Reliable Printed Products, Jbp. ✆ : 315501

एस.एफ.आर.आई. प्रचार पत्रिका - 24

सनाय

(केसिया आगस्टफोलिया)

जैव विविधता एवं
औषधी पौध शाखा

म.प्र. राज्य वन अनुसंधान
संस्थान, जबलपुर

2001

सनाय
(केसिया आगस्टफोलिया)

सनाय 'फेबेसी' कुल का पौधा है जिसे विभिन्न प्रदेशों में सेना, इंडियन सेन्ना, सोनामुखी, टेन्नेवेली सेन्ना आदि नामों से जाना जाता है। इसका उल्लेख संस्कृत में मार्कण्डी नाम से मिलता है। मूलतः सनाय अरब देश का पौधा है वहीं से यह भारत आया था। इसकी खेती तमिलनाडु राज्य में प्रारंभ हुई थी परन्तु वर्तमान में केरल, आंध्रप्रदेश तथा राजस्थान में भी इसकी खेती काफी मात्रा में हो रही है। पूर्णतया बंजरभूमि में आसानी से उपजाये जाने वाली फसल है जिसे पानी, खाद आदि की जरूरत ज्यादा नहीं होती है। एक बार बोने से पांच वर्ष तक फसल देने वाले इस पौधे को जानवर-कीट आदि भी हानि नहीं पहुँचाते हैं। सनाय 40-120 सेमी. ऊंचा, बहुवर्षीय, झाड़ीनुमा पौधा है जिसमें बहुशाखित तनों पर हरे रंगे की एक दूसरे के विपरीत 3-4 सेमी. लंबी, संकरी पत्तियां होती हैं। फूल पीले रंगे के गुच्छे में रेसीम प्रकार के होते हैं। बीज भूरे-काले रंगे के फली में लगे रहते हैं।

उपयोगी भाग एवं औषधीय गुण

इसका उपयोगी भाग पत्तियां व बीज होते हैं। पत्तियों में 'सेनोसाइड' द्रव्य रेचक के रूप में कार्य करता है। पत्तियों में 2-3 प्रतिशत तथा फल्लियों में 4-5 प्रतिशत सेनासाइड पाये जाते हैं। इसका उपयोग पेट संबंधी बीमारियों, पीलिया, अस्थमा, मलेरिया, बुखार, अपच आदि में किया जाता है। बाजार में उपलब्ध 'कायम चूर्ण' में सनाय उपस्थित होता है।

कृषि तकनीकि

सनाय शुष्क तथा कम वर्षा युक्त जलवायु प्रदेशों में जहाँ 40 से 50 से.ग्रे. तापमान हो तथा रेतीली दोमट मिट्टी तथा सभी प्रकार की भूमि (विशेषकर कम लवणीय) में आसानी से उगाया जा सकता। बंजर एवं पड़त भूमि में आसानी से खेती की जा सकती है। दलदली एवं पानी युक्त स्थान इसके लिये ठीक नहीं है। वर्षा पूर्व खेत की एक दो बार जुताई कर खरपतवार रहित कर लें तो अच्छा है। खेत में 15 जुलाई से 15 सितंबर के बीच बुआई बीजों द्वारा करना उपयुक्त होता है। प्रति हेक्टेयर 10-12 कि.ग्रा. बीज आवश्यक है। जिसकी वर्तमान दर 200 रु. प्रति कि.ग्रा. है। बिजाई ट्रेक्टर या छिड़काव पद्धति द्वारा करते हैं। बीज एक इंच से ज्यादा गहरा न बोयें। बीजाई करते समय कतार से कतार तथा पौधे से पौधे की दूरी 30 सेमी. होनी चाहिये बीजों का अंकुरण 60% से 70% होता है। 10-15 दिन बाद बीज अंकुरित हो जाते हैं। आवश्यक वृद्धि के लिये एक बार निंदाई आवश्यक है तथा पौध जमने तक